आओ परर्यावरण बचाएँ,
अपना जीवन बेहतर बनाएँ ।

वृक्ष, पानी और शुद्ध हवा,
जीवन जीने की अनमोल दवा ।

जलवायु संकट और जलवायु संरक्षण

आए दिन हम पर्यावरण, पर्यावरण संकट, जलवायु परिवर्तन, जलवायु संकट, जलवायु न्याय, जलवायु संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण [Environment, Climate change, Climate Crisis, Environmental Crisis, Environmental Protection] जैसे शब्दों को सुनते हैं। पर्यावरण वह प्राकृतिक संसार है जिसमें धरती, आकाश, वायु, जल है और जहाँ मनुष्य, पशु, पेड़–पौधे आदि रहते हैं, विचरण करते हैं और विकास करते हैं। पर्यावरण इन कार्यों को तब तक कर सकती है जब तक पर्यावरण के विरूद्ध कोई अवरोध नहीं खड़ा किया जाए। पर्यावरण को सभी ग्रहों की विरासत और सभी संसाधनों की समग्रता के रूप में परिभाषित किया गया है। पर्यावरण चार महत्वपूर्ण कार्य करता हैः (i) यह नवीकरणीय और गैर–नवीकरणीय दोनों संसाधनों की आपूर्ति करता है। (ii) यह अपशिष्ट को आत्मसात करता है, (iii) यह आनुवंशिक और जैव विविधता प्रदान करके जीवन को बनाए रखता है, और (iv) यह दृश्य आदि जैसी सौंदर्य सेवाएं भी प्रदान करता है।

प्रकृति पर हमारी निर्भरता इतनी अधिक है कि पृथ्वी के पर्यावरणीय संसाधनों की रक्षा किए बिना हम लम्बें समय तक जीवित नहीं रह सकते। इसीलिए अधिकांश संस्कृतियाँ पर्यावरण को प्रकृति माँ कहती हैं और अधिकांश परम्परागत समाज जानते हैं कि प्रकृति का सम्मान करना उनकी अपनी जीविका की रक्षा के लिए कितना आवश्यक है। इससे ऐसे अनेक सांस्कृतिक कार्यकलाप विकसित हुए हैं, जिन्होंने परम्परागत समाजों को उनके प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सहायता दी है। भारत में प्रकृति और सभी जीवित प्राणियों का ध्यान रखना कोई नई बात नहीं है, हमारी सभी परम्पराएं इन्हीं जीवन मूल्यों पर आधारित हैं। सम्राट अशोक के शिलालेखों में कहा गया है कि जीवन के सभी रूप हमारे कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है, और यह बहुत पहले, चौथी सदी ईसा–पूर्व की बात है।

विभिन्न धर्मों ने भी मनुष्य और पर्यावरण के बीच जो सहजीवन या अन्तर–निर्भरता है, उस पर जोर दिया है।

''इस धरती पर मैं खड़ा हूँ, अपराजेय, असंबद्ध, अहानि। हे पृथ्वी, मुझे उस पौष्टिक शक्ति के बीच स्थापित करें जो आपके शरीर से निकलती है। पृथ्वी मेरी माँ है, उसका बच्चा मैं हूँ''! –(अथर्ववेद)

"यह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को बस्ती का स्थान और आकाश को छत बनाया और तुम्हें बनाया और तुम्हारे रूपों को परिपूर्ण किया और तुम्हें अच्छी चीजें प्रदान कीं। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। फिर बरकत है अल्लाह, सारे संसार का रब।" (कुरान, 40:64)

"हमारे आम घर की रक्षा करने की तत्काल चुनौती में एक स्थायी और अभिन्न विकास की तलाश में पूरे मानव परिवार को एक साथ लाने की चिंता शामिल है, क्योंकि हम जानते हैं कि चीजें बदल सकती हैं। सृष्टिकर्ता हमें नहीं छोड़ता; वह अपनी प्रेममयी योजना को कभी नहीं छोड़ता है या हमें बनाने के लिए पश्चाताप नहीं करता है। मानवता में अभी भी हमारे आम घर के निर्माण में एक साथ काम करने की क्षमता है''। (पोप फ्रांसिस, 2015) ...

''जैसे मधुमक्खी फूल, उसके रंग, उसकी खुशबू को नुकसान पहुँचाएं बिना उसका अमृत ले जाती है और उड़ जाती है, उसी तरह ऋषि को भी गाँव से गुजरना चाहिए''। (धम्मपद चतुर्थ, पुप्फावग्गाः फूल, 49)

जलवायु और जलवाय परिवर्तन क्या है?

सामान्यतः जलवायु का आशय किसी दिये गए क्षेत्र में लंबे समय तक औसत मौसम से होता हैं। जलवायु परिवर्तन का मतलब तापमान और मौसम के पैटर्न में दीर्घकालिक बदलाव से है। ऐसे बदलाव प्राकृतिक हो सकते हैं, जो सूर्य की गतिविधि में बदलाव या बड़े ज्वालामुखी विस्फोटों के कारण हो सकते हैं। लेकिन 1800 के दशक से, मानवीय गतिविधियाँ जिनमें मुख्य रूप से कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म (Fossil) - ईधन जलाना तेज जलवायु परिवर्तन के कारण हैं। अतः जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्तन (Climate Change) कहते हैं।

जलवायु परिवर्तन को किसी एक स्थान विशेष में भी महसूस किया जा सकता है, एवं संपूर्ण विश्व में भी। यदि वर्तमान संदर्भ में बात करें तो इसका प्रभाव लगभग संपूर्ण विश्व में देखने को मिल रहा है। पृथ्वी के समग्र इतिहास में जलवायु कई बार परिवर्तित हुई है एवं जलवायु परिवर्तन की अनेक घटनाएँ सामने आई है। बहुत से लोग सोचते हैं कि जलवायु परिवर्तन का मुख्य अर्थ है गर्म तापमान, लेकिन तापमान में वृद्धि तो कहानी की शुरूआत मात्र है। चूँकि पृथ्वी एक प्रणाली है, जहाँ सब कुछ एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है, इसलिए एक क्षेत्र में होने वाला परिवर्तन अन्य सभी क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों को प्रभावित कर सकता है।

जलवायु परिवर्तन के परिणामों में अब अन्य बातों के अलावा तीव्र सूखा, जल की कमी, भीषण आग, समुद्र का बढ़ता जल स्तर, बाढ़, ध्रुवीय बर्फ का तेजी से पिघलना, विनाशकारी तूफान और जैव विविधता में गिरावट आदि शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण

- ✓ जरूरत से ज्यादा बिजली का उपयोग करना
- ✓ जीवाश्म (fossil) को जलाना
- ✓ जंगल को काटना
- ✓ जल की बर्बादी
- ✓ आरामदायी गाड़ियों का उपयोग करना
- ✓ जरूरत से ज्यादा चीजों को उपयोग करना
- ✓ लकड़ी, कोयला, तेल आदि को अत्यधिक जलाना
- ✓ जीवन जीने की शैली संधारणीय या टिकाऊ नहीं
- ✓ कृषि की तीव्रीकरण
- ✓ एसी, हीटर का इस्तेमाल करना
- ✓ कचड़ा का सही इस्तेमाल नहीं करना
- ✓ अपशिष्ट जल (waste water) को इस्तेमाल नहीं करना
- ✓ वृक्षारोपण नहीं करना
- ✓ गरीबी, अमीरी की खाई को बढ़ावा देना
- ✓ शहरीकरण, औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण
- ✓ राजनैतिक और आर्थिक असमानता

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

जलवायु परिवर्तन हमारे स्वास्थ्य, भोजन उगाने की क्षमता, आवास, सुरक्षा और काम को प्रभावित करते है। समुन्द्र–स्तर में वृद्धि और खारे पानी के घुसपैठ जैसी स्थितियाँ इस हद तक बढ़ गई है कि पूरे समुदायों को स्थानांतरित होना पड़ता है, और लंबे समय तक सूखे के कारण लोगों को अकाल का खतरा है। भविष्य में, मौसम संबंधी घटनाओं से विस्थापित होने वाले लोगों की संख्या बढ़ने की उम्मीद है। इन्हें अपने ही देश में पर्यावरण शरणार्थी कहा जाता है।

जलवायु परिवर्तन के कुछ महत्वपूर्ण प्रभावः

- ❖ उच्च तापमान
- ❖ वर्षा के पैटर्न में बदलाव
- ❖ चरम मौसम की घटनाओं का खतरा बढ़ना
- ❖ जंगल की आग का खतरा बढ़ना
- ❖ बाढ़ का खतरा बढ़ना
- ❖ सूखे का खतरा बढ़ना
- ❖ रोग और बीमारी का खतरा बढ़ना
- ❖ चरम मौसमी घटनाओं के कारण आर्थिक नुकसान में वृद्धि होना
- ❖ समुद्र के स्तर में वृद्धि होना
- ❖ वैश्विक तापमान में वृद्धि होना
- ❖ पारिस्थितिकी तंत्र और आर्द्रभूमि के लिए खतरा

भारत और जलवायु संकट

भारत में मिट्टी की समृद्ध गुणवत्ता, सैकड़ों नदियों और सहायक नदियों, हरे–भरे जंगलों, भूमि की सतह के नीचे बहुत सारे खनिज भंडार, हिंद महासागर के विशाल खंड, पहाड़ों की श्रृंखलाएं आदि के संदर्भ में प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन हैं। हमारा साझा घर और हमारा साझा भविष्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था अन्योन्याश्रित हैं और इनको एक दूसरे की आवश्यकता है। इसलिए, विकास जो पर्यावरण पर इसके नतीजों की अनदेखी करता है, उस पर्यावरण को नष्ट कर देगा जो जीवन रूपों को बनाए रखता है। हमें सतत विकास की आवश्यकता हैः ऐसा विकास जो भविष्य की सभी पीढ़ियों को जीवन की संभावित औसत गुणवत्ता प्राप्त करने की अनुमति देगा जो कम से कम उतना ही उच्च है जितना कि वर्तमान पीढ़ी द्वारा आनंद लिया जा रहा है।

जलवायु न्याय (Climate Justice) : *''करे कोई, भरे कोई''*

हमने यह तो समझ लिया कि तीव्र जलवायु परिवर्तन के क्या प्रभाव हो सकते हैं। परन्तु हमें यह भी समझना चाहिए कि जिस प्रकार पूरी दुनिया में या किसी देश के सभी हिस्सों पर जलवायु परिवर्तन के एक जैसे प्रभाव नहीं पड़ते हैं। अधिक आय वाले सुविधासम्पन्न लोगों पर इसका प्रभाव कम पड़ता है जबकि कम आमदनी वाले सुविधाविहीन लोगों के उपर अधिक पडता है। जाति, अर्थ, लिंग, धर्म, क्षेत्र के आधार पर बनी यह भारतीय समाज और देश में दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, अतिपिछड़ा, जलवायु संकट से तीव्र रूप में प्रभावित हैं। इनमें महिलाएँ और बच्चे सबसे अधिक प्रभावित हैं, क्योंकि वर्त्तमान सामाजिक और राजनैतिक ढाँचे में वे अपने लिए निर्णय नहीं कर सकते हैं। सरकार शिक्षा की तरह जलवायु संरक्षण को प्राथमिकता नहीं देती है। क्योंकि सरकारी अफसरों, नेताओं और ठेकेदारों को सड़क, भवन, पुल निर्माण में मोटा पैसा मिलता है, लेकिन पर्यावरण संरक्षण में समर्पण की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेवार कौन हैं?

जलवायु परिवर्तन का कारण बनने वाले उत्सर्जन दुनिया के हर हिस्से से आते हैं और सभी को प्रभावित करते हैं, लेकिन कुछ देश दूसरों की तुलना में बहुत अधिक उत्सर्जन करते हैं या तापमान को बढाते हैं। अकेले सात सबसे बड़े उत्सर्जक देशें चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, यूरोपीय संघ, इंडोनेशिया, रूसी संघ और ब्राजील हैं। इन 7 देशों ने 2020 में सभी वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग आधा हिस्सा उत्सर्जित किया है। विश्व में सब से अधिक उत्सर्जन करने वाले इन 7 देशों ने यह वादा किया कि वे विकासशील देशों को प्रति वर्ष 7,000 करोड़ रूपए प्रदान करेंगे, जिससे विकासशील देश अपने यहां ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने का प्रयास करेंगे। लेकिन यह मात्र एक घोषणा बन कर रह गया।

आद्यौगिक कार्यकलापों और ऊर्जा के अत्याधिक इस्तेमाल से विकसित देश जलवायु संकट को बढ़ावा दे रहे हैं, ना केवल विकसित देशों में बल्कि विकासशील देशों में पूंजीपत्ति वर्ग सिर्फ मुनाफा कमाने में लगा है। पर्यावरण के विनाश से इन्हें कुछ लेना–देना नहीं है। ऑक्स्फेम के एक अध्ययन के अनुसार कुल आबादी का 1% अरबपति जलवायु को जितना नुकसान पहुँचाते हैं उतना 65% आबादी करता है। अतः अमीर देश और अमीर लोग पर्यावरण को विकास के नाम पर तहस–नहस करके अमीर होते जा रहें हैं। जबकी गरीब–निर्धन लोग जलवायु परिवर्तन से सब से ज्यादा प्रभावित हैं। उदाहरण के लिए बिहार में 2008 में कोशी क्षेत्र में जो बाढ़ आई थी उससे 3 करोड़ आबादी प्रभावित हुई। इनमें से कई गरीब परिवारों का उचित पुनर्वास भी नहीं हुआ। इनमें बहुत सारे परिवार आज भी जलवायु शरणार्थी के रूप में जीने के लिए मजबूर हैं।

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना : जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना का शुभारंभ वर्ष 2008 में किया गया था इसका उद्देश्य जनता के प्रतिनिधियों, सरकार की विभिन्न एजेंसियों, वैज्ञानिकों, उद्योग और समुदायों को जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरे और इससे मुकाबला करने के उपायों के बारे में जागरूक करना है।

इस कार्ययोजना में मुख्यतः 8 मिशन शामिल हैं:

- राष्ट्रीय सौर मिशन
- विकसित ऊर्जा–दक्षता के लिए राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर निवास पर राष्ट्रीय मिशन
- राष्ट्रीय जल मिशन
- सुस्थिर हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन
- हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन
- जलवायु परिवर्तन हेतु रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन

भारत सरकार ने 1980 में पर्यावरण विभाग स्थापित किया था। 1985 में इसे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय कहा गया। फिर 2014 से यह पर्यावरण, वन और जलवायु मंत्रालय कहा जाता है। 2021–22 में इस मंत्रालय ने 2870 करोड़ खर्च किया था। इस प्रयास का क्या परिणाम हुआ, कोई नहीं जानता है। उदाहरण के लिए:– शहरी भारत के 1,50,000 टन नगरपालिका कचरे का प्रबंधन करके, शहरी भारत स्वच्छ वातावरण बनाते हुए और लाखों लोगों के लिए गरिमा और सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए 6,00,000 से 7,50,000 नौकरियां पैदा कर सकता है। लेकिन, हम जो उस कचरे के जनरेटर हैं, इस प्रयास के लिए तैयार नहीं है कि उस कचरे के प्रबंधन से दीर्घकालिक लाभ उठाएँ। चूँकि जलवायु सुरक्षा, शिक्षा की तरह हमारी सरकार की प्राथमिकता नहीं हैं तो जनता को जलवायु संकट के परिणामों को झेलना पड़ता है।

जलवायु परिवर्तन के समाधान

जलवायु परिवर्तन के कई समाधान आर्थिक लाभ प्रदान कर सकते हैं, साथ ही हमारे जीवन को बेहतर बना सकते हैं और पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। जनवायु परिणामों के अनुकूल होने से लोगों, घरों, व्यवसायों, आजीविका, बुनियादी ढांचे और प्राकृतिक पारिस्थिति की तंत्र की रक्षा होती हैं। इसमें वर्तमान प्रभाव और भविष्य में संभावित प्रभाव शामिल हैं। अनुकूलन की आवश्यकता हर जगह होगी, लेकिन जलवायु खतरों से निपटने के लिए सबसे कम संसाधनों वाले सबसे कमजोर लोगों के लिए इसे अभी प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए आपदाओं के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली जीवन और संपत्ति बचाती है, और प्रारंभिक लागत से 10 गुना तक लाभ दे सकती है।

जलवायु संरक्षण हेतु व्यापक प्रयास की आवश्यकता

- **जीवाश्म ईंधन को जमीन में ही रहने दें।** जीवाश्म ईंधन में कोयला, तेल और गैस शामिल हैं और जितना ज्यादा निकाला और जलाया जाएगा, जलवायु परिवर्तन उतना ही बुरा होगा।
- **नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश करें।** हमारे मुख्य ऊर्जा स्त्रोतों को स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा में बदलना जीवाश्म ईंधन का उपयोग बंद करने का सबसे अच्छा तरीका है। इनमें सौर, पवन, लहर, ज्वार और भूतापीय ऊर्जा जैसी प्रौद्योगिकियाँ शामिल हैं।

- **टिकाऊ परिवहन अपनाएँ।** पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहन, विमान और जहाज जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल करते हैं। कार का इस्तेमाल कम करने, इलेक्ट्रिक वाहनों का ज्यादा उपयोग करने और विमान यात्रा को कम करने से न केवल जलवायु परिवर्तन को रोकने में मदद मिलेगी, बल्कि वायु प्रदूषण भी कम होगा।
- **हमारे घरों को पर्यावरण अनुकूल (Environment Friendly) बनाएँ।** सरकार घरों को हरित तरीके से गर्म करने में मदद कर सकती हैं जैसे– दीवारों और छतों को इन्सुलेट करके और तेल या गैस बॉयलर से हीट पंप को बदल कर।
- **जैविक और खुदरती खेती करें।** व्यवसाय और खाद्य खुदरा विक्रेता खेती के तरीकों में सुधार कर सकते हैं और लोगों को बदलाव करने में मदद करने के लिए अधिक पौधे आधारित उत्पाद प्रदान कर सकते हैं।
- **अधिक कार्बन अवशोषित करने के लिए प्रकृति को पुनर्स्थापित करें।** प्राकृतिक दुनिया हमारे उत्सर्जन को साफ करने में बहुत अच्छी है, लेकिन हमें इसकी देखभाल करने की आवश्यकता है। सही जगहों पर पेड़ लगाना या 'रीवाइल्डिंग' (पुनःनिर्माण) योजनाओं के माध्यम से प्रकृति को भूमि वापस देना एक अच्छी शुरूआत है।
- **जंगलों की रक्षा करें।** जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में वन महत्वपूर्ण हैं, और उनकी रक्षा करना एक महत्वपूण जलवायु समाधान है। औद्योगिक पैमाने पर वनों को काटने से विशाल पेड़ नष्ट हो जाते हैं जो भारी मात्रा में कार्बन सोख सकते हैं। वृक्षारोपण के साथ, जलवायु संरक्षण के विभिन्न तरीकों में शामिल होना।
- **महासागरों की रक्षा करें।** महासागर वायुमंडल से बड़ी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, जो हमारे जलवायु को स्थिर रखने में मदद करता है। लेकिन कई महासागरों में तेल और गैस की ड्रिलिंग से भी जलवायु प्रभावित होता है। गहरे समुद्र में खनन के कारण भी उन्हें खतरा होता है।
- **लोगों द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा कम करें।** हमारे परिवहन, फैशन, भोजन और अन्य जीवनशैली विकल्पें का जलवायु पर अलग–अलग प्रभाव ड़ालते हैं। उदाहरण के लिए– फैशन और प्रौद्योगिकी कंपनियाँ वास्तविक रूप से जरूरत से कहीं ज्यादा उत्पाद जारी करती हैं। अधिक अमीर देशों और अमीर लोगों में समग्र खपत को कम करने से ग्रह पर कम दबाव डालने में मदद मिल सकती है।
- **प्लास्टिक का उपयोग कम करें।** प्लास्टिक तेल से बनता है, और तेल को निकालने, परिष्कृत करने और प्लास्टिक में बदलने की प्रक्रिया आश्चर्यजनक रूप से कार्बनगहन है। यह प्रकृति में जल्दी से विघटित नहीं होता हैं, इसलिए बहुत सारा प्लास्टिक जला दिया जाता है, जो उत्सर्जन में योगदान देता है।

हमारे सार्वजनिक घर, धरोहर, प्राकृतिक संसाधनों को बचाना है तोः

- यह पहचानना कि धरती सबका धरोहर है
- पर्यावरण संकट को स्वीकारना
- गरीब लोग पर्यावरण नुकसान से ज्यादा प्रभावित है
- कम उपयोग करें, पुनः उपयोग करें, रीसायकल करें
- जो फेंकते हैं, उसमें कटौती करें
- आस–पास साफ–सुथरा रखने के लिए स्वयं सेवक बनें
- अपने आप को शिक्षित करें
- जिन्हें मौका नहीं है उन्हें शिक्षित कराएँ
- सोच–समझकर खरीदारी करें
- पर्यावरण मन और कार्य परिवर्तन
- लम्बें समय तक चलनेवाले बिजली उपकरणों का इस्तेमाल करें
- पेड़ लगाएँ और संरक्षण करें
- युवा क्लब के तत्वाधान में, वृक्षारोपण एवं संरक्षण करें
- जब भी संभव हो सार्वजनिक परिवहन जैसे बस, ट्रेन, में यात्रा करें
- सिंगल यूज प्लास्टिक से बचें
- जल संरक्षण करें
- अपने बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में शिक्षित करें
- घर, गाँव, समुदाय में सबों को संगठित कर पर्यावरण बचाएँ और अपने को बचाएँ
- पर्यावरण भ्रमण, जंगल भ्रमण, नदी–नाला भ्रमण, खेत–खलिहान भ्रमण, गाँव–गली भ्रमण, बाग–बगैचा भ्रमण।

एक राष्ट्र के रूप में और वैश्विक समुदाय के नागरिक के रूप में अपने लिए और आने वाली पीढ़ी के लिए जीवन के एक स्थायी तरीके को बनाए रखना हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक जिम्मेदारी है। आइए, इसपर चिंतन करें और इन्हें कार्य में उतारें। आम जनता के प्रयास के साथ सरकार, पूंजीपति, उद्योगपति, जमींदार और विकसित देशों पर दबाव डालें और पर्यावारण न्याय कि दिशा में कार्य करें।

XIXR, SXCMT, Taru Mitra, Patna
9431035002, 7209807821

दलित विकास अभियान समिति
8709325891